इन गुरूओं से बचें

1. जो गुरू गीता, बाइबल, गुरूग्रंथ
या उपनिषदों की व्याख्या करें उन से बचें। क्योंकि इसका अर्थ इतना ही है कि अभी तक खुद का स्वाद नही मिला इसलिए दूसरों के स्वाद की चर्चा कर रहे हैं। अभी तक अपनी गीता पैदा नहीं हुई, इन ग्रंथो को कंठस्थ कर बुद्धि के स्तर पर ज्ञान की लाइब्रेरी ओढ़ ली है, जैसा लिखा वैसा रटे जा रहे हैं। तोता रटन हो रहा है। इन गुरूओं से कभी सत्य की या जागरण की आशा न करें। पूरा जीवन इनके गुणगान में नष्ट हो जाता है परन्तु भीतर का दीप नही जलता। ऐसे उधार के ज्ञान वाले गुरू से न जुड़ें - सिर्फ ऐसे गुरू से जुडें जिनके भीतर का, स्वयं का दीप जल गया हो।

2. जो गुरू कान में मंत्र फूंकें - उस गुरू को ढोंगी समझना। वह अनावश्यक रहस्य पैदा कर अपने बाड़े की एक और भेड़ तैयार कर रहा है जिससे आप जीवन भर उनके शिष्य (गुलाम) अनुयायी बने रहें, इस झूठे भ्रम मे कि तुम्हें आज नहीं तो कल परमात्मा मिल जाएगा, या पुण्य प्राप्त होगा या मोक्ष मिलेगा या स्वर्ग मिलेगा। जागा हुआ गुरू कभी मंत्र नहीं देता, वह आँख देता है, बांधता नहीं मुक्त करता है, वह अपने बाड़े की भेड नही बनाता, रहस्य नहीं रचता। वह जागने के मार्ग की झलक दे सकता है संपूर्ण मार्ग नही। हर व्यक्ति को अपने ही स्वयं के मार्ग को खोलना पड़ता है। इसलिए बुद्ध ने कृष्ण का मार्ग नहीं पकड़ा, नानक ने महावीर का मार्ग नहीं पकड़ा, कबीर ने ईसामसीह का मार्ग नही पकड़ा। 'गुरूमंत्र' शब्द ही गुलामी का मंत्र हैं।, जो आंख खोलकर अपने से मुक्त कर दे वह है सच्चा गुरूमंत्र, जो गुरूमंत्र बांध दें तो समझ लेना वह गुलामी का मंत्र है। दुनिया में ऐसा कोई मंत्र आज तक नहीं बना, और न ही है, जो किसी के कान में फूँका जा सके। ठगने के लिए, अंधा बनाने के लिए ये बहुत सुदंर शब्द हैं। ऐसे गुरूओं से कभी बेवकूफ न बनें।

3. जो गुरू 'स्त्री' शब्द सें या 'स्त्रियों' को छूने से डरता है, उसको दुनिया का सबसे बड़ा महाढोंगी गुरू समझना क्योंकि वह अभी भी स्त्री-पुरूष में भेद करता है, उसके भीतर स्त्री के प्रति भय एवं घृणा भरी पड़ी है, वह अपने भीतर की दबी हुई काम-वासना से भयभीत है। सच्चा गुरू कामवासना को जान चुका होता है उसके लिए स्त्री मातृवत लगती है, कामवासना से भयभीत व्यक्तित्व ही स्त्री से डरता है। सच्चा गुरू तो स्त्री को महाशक्ति, पूजनीय दृष्टि से देखता है, स्त्री के चरणों में उसका सर झुक जाए तो समझना वही सही गुरू है।

4. जो गुरू अपने आप को अवतार बताएँ उसको सबसे बड़ा ठग समझना, वह भारत के बेहोश लोगों की, अंधविश्वास, अंध श्रद्धा की नब्ज़ पकड़ चुका है वह अच्छी तरह जानता है कि हम पौराणिक काल्पनिक कहानियों के अंधे भक्त हैं जो हमें सदियों से सुनाया जा रहा है हम चुपचाप, पंडित, पुरोहित, कथाकारों की बातों को शतप्रतिशत सच मान बैठते हैं, हम परंपरागत बातों पर आँख मूंदकर विश्वास करते हैं। इसलिए पुराण एवं परंपरा के नाम पर हमें ठगना बहुत आसान है। 'अवतार' का अर्थ है ईश्वर का मानव में अवतरण। हम सब ईश्वर के ही अवतार हैं जो झूठे भ्रम, अहं एवं ज्ञान से मुक्त हो जाता है, जो अज्ञानता का पर्दा हटा लेता है वह ईश्वर के अवतरण को अनुभव कर जाता है। जो अपना अज्ञानता का पर्दा किसी कारणवश नहीं हटा पाता है वह अपने भीतर छुपे हुए ईश्वर के अवतरण को पहचान नहीं पाता है। हर व्यक्ति में ईश्वर का अवतरण ही है, आप चाहो तो अवतार बन जाओ। हमारा परम शुद्ध स्वरूप ही परमात्मा का सच्चा अवतार है।

5. जो गुरू संसार को मायाजाल बताकर जीवन से भागना सिखाए - समझ लेना वह स्वयं भटका हुआ है, क्योंकि जागृत गुरू जीते जागते प्रत्यक्ष जीवन का परमभोग सिखाएगा, जीवन से प्रेम करना एवं सम्मान करना सिखाएगा। वह कीचड़ के बीच कमल की तरह खिलकर जीवन जीने का आनंद सिखाएगा, वह ब्रह्म भी सत्य, जगत भी सत्य की उद्घोषणा करेगा, वह अपने स्वभाव में खिलकर अपनी सुगंध फैलाने की कला सिखाएगा। वह स्त्री से बचना नहीं गहराई से जुड़ना सिखाएगा। स्त्री उसके लिये परमयोग-परममुक्ति का साधन होगी, सच्चा गुरू धन से मुक्ति नही, धन समृद्धि का आदर करना सिखाएगा, खूब धन-समृद्धि पैदा करने का प्रोत्साहन देगा। वह जागरूकतापूर्वक इसका उपयोग करना सिखाएगा। जो गुरू धन-स्त्री का विरोध करे तो समझ लेना कि किसी भी देश के गरीब रहने का सबसे जिम्मेदार इनके यही घातक विचार हैं। समृद्धि एवं विकास के यही सबसे बड़े दुश्मन हैं, इनसे बचें।

6. जो गुरू आधुनिक प्रगति एवं उपयोगी साधनों की बजाय पुराने आदिवासी युग के कपड़े पहनता है, पुराने साधनों का ही जानबूझकर प्रयोग करता है तो समझ लेना वह अप्रगतिशील, पिछड़ा हुआ, संकीर्ण प्रवृतिवाला कंडीशन व्यक्ति है, और हम अगर

इनको त्यागी, सादा पुरूष समझते हैं, जो जीवन के बहाव में आगे बढ़ने के बजाय पुरानेपन से जुड़ा रहता है तो आप गलत मानसिकता के शिकार है, ये आधुनिकता को तुच्छ समझते है और पिछड़ेपन को महान त्याग, समझते हैं। ऐसे अति कष्टपूर्ण जीवन असुविधाओ में जब ये गुरू जीते हैं तो हमारे सम्मान से इनका अहंकार खुब पुष्ट होता है। ऐसे गुरू दयनीय होते है, पूजनीय नही। ये आपकी प्रगतिशीलता को अपराधभाव से ग्रसित कर देते हैं, आपमें हीनता पैदा करते हैं ऐसे गुरू देश, समाज व व्यक्ति के लिए अंततया घातक सिद्ध होते हैं। इनसे बचें। जागा हुआ सच्चा गुरू, बुद्धि एवं कला से उत्पन्न आधुनिक आविष्कार एवं नवीन साधनों का निरासक्त भाव से पूर्णभोग कर जीवन को सुखद, सरल, सुविधा युक्त बनाएगा। वह नवीन साधनों, नवीन आविष्कारों का सच्चा प्रशंसक होगा, जो गुरू इन नवीन साधनों से बचता है तो समझ लेना वह अंधी, विकृत मानसिकता में जकड़ा हुआ है, जागृत पुरूष नहीं। कई संत, महात्मा तो वाहनों का उपयोग भी पाप समझते है और हम लोग बड़ी श्रद्धा से इनकी भावनाओं का सम्मान करते है। ऐसे गुरू जो स्वयं अवरूद्ध हैं उनसे आप कौन सी जागृति की आशा करते हैं।

7. जो गुरू संसार के सागर में कभी उतरा नहीं, जिसने कभी जीवनरूपी संसार की गाड़ी तक नही चलाई, उसको छुआ तक नही वह अगर सांसारिक जीवन जीने की कला सिखाए तो समझ लेना दुनिया का वह सबसे बड़ा झूठा है। जो जीवन के युद्ध में कभी उतरा नही और वह तुम्हें युद्ध-रण के कौशल सिखाएगा, जो स्वयं जीवन के सागर में कभी तैरा नही वह तुम्हें तैराकी के गुर सिखाएगा और मजेदार बात तो ये है कि हम अपनी जीवन की सारी व्यक्तिगत, पारिवारिक, व्यवसायिक, व्यवहारिक आर्थिक एवं भावात्मक समस्याओं का समाधान इन रणछोड़दासों से पूछते हैं और अगर ये आपका मार्गदर्शन करते हैं तो इनसें बड़ा झूठा और कौन हो सकता है। आपका सच्चा गुरू वह है जो 40-50 साल एक टेढ़ी विपरीत मिजाज की पत्नी या पति के साथ मजे से जीकर उसके प्रति सम्मान एवं प्रेम रखता हो, जो चार अलग-अलग मिजाज के बच्चों को पालकर उनके प्रति समान प्रेम एवं व्यवहार करता हो, जो व्यावहारिक जगत में रिश्तेदारों के व्यंग-बाण, स्वार्थ के दंश एवं धोखा खाकर भी उनके प्रति प्रेम स्थापित रखता है, जो व्यवसाय में बेईमान, चालाक, भ्रष्ट, लालची लोगों के बीच में भी अपनी क्षमता रखकर कुशलतापूर्वक समृद्धि हासिल करता हो, जो बाजार के बीच, भीड़ के बीच जीने वाला गुरू ही तुम्हारा सच्चा वास्तविक अनुभवी मार्गदर्शक(गुरू) होगा-क्योंकि उसने जीवन को कड़वे-मीठे, अच्छाई-बुराई के प्रत्यक्ष अनुभवों के साथ जिया हैं। अन्यथा सामान्यत: गुरू अध्यात्म के नाम पर ऊँची-ऊँची आदर्शवादी बातें करते हैं। आश्रम, हिमालय में बैठे गुरू से अंतर्जगत का ज्ञान पूछ सकते हैं, बाह्यजगत का कभी नहीं। गुरू ढूँढें बीच बाजार।

8. जो गुरू आपको अंतर्मुखी बनाने के बजाय बाहर के कर्मकांड, मूर्तिपूजा, यज्ञ हवन, तीर्थ यात्रा, मंत्र, जप, तप एवं विविध बाह्य साधनाओं में उलझाता है, समझ लेना वह अति निम्न कोटि का अध्यात्मिक गुरू है। अभी वह स्वयं ही भीतर के जगत से परिचित नही है, वह स्वयं बाहर के जगत से मुक्त नही हो पाया, वह अभी नर्सरी क्लास में है। ऐसे गुरूओं से आपको नर्सरी की ही शिक्षा मिलेगी, उच्च शिक्षा नही। इन्ही बाह्यवादी गुरूओं के कारण सदियों से मानव भटककर अतंर्जगत के खजानों को जानने के बजाय बाहर के खिलौने में ही उलझकर रह गया। इन्हीं के क्षुद्रज्ञान के कारण कर्मकांडी लोग तो करोड़ों पैदा हो गए परंतु अंतर्जगत के बुद्ध महावीर बहुत कम पैदा हो पाए। बाह्य जगत में सामान्यपन को उलझाने का एक और सबसे बड़ा कारण पंडित पुरोहित गुरूओ का जीवन व्यापन, व्यवसाय एवं अहंकार का पोषण, इनके निहित लालच एवं स्वार्थ ने हर सामान्य व्यक्ति के अंतरमन के द्वार हमेशा के लिये बंद कर दिए, सच्चा गुरू आपके सारे बाहर के आवलंबन खींच लेगा।

वह इन खिलौनों में उलझने के बजाय भीतर के जगत सें परिचय करवाकर खुद को भी एवं आपके अपने आप से भी हमेशा के लिये मुक्त करेगा। सारी निर्भरता एवं बंधनों से मुक्त करेगा, ऐसा गुरू मिले तो जरूर पकड़ लेना। बाहर के कर्मकांडो से छोटी-छोटी शांति की बूंदें अवश्य छलकाता हैं। परन्तु हम इन शांति की बूंदों को ही सबकुछ समझकर भीतर के अनंत शांति के सागर से वंचित रह जाते है।

9. जो गुरू अपनी पूजा करवाता है, अपनी तस्वीरें बँटवाता है, अपनी आरती उतरवाता है, चरण धुलवाता है, अपनी खूब सेवा करवाता है, तो समझ लेना तुम एक जागृत गुरू के बजाय अहंकारी, पाखंडी गुरू से जुड़ गए हो। ऐसे गुरूओं के चक्कर में आपका संपूर्ण जीवन नष्ट हो जाएगा इन गुरूओं से बचें। सच्चा गुरू अपने साथ मोह के बंधन में बंधने से रोकेगा क्योंकि वह जानता है कि अगर शिष्य गुरू के मोह में बंध गया तो उसकी प्रगति रूक जाएगी, यह अंधभक्ति, ये अंधश्रद्धा उसको सीमित कर देगी।

10. जो गुरू आध्यात्मिकता के नाम पर सामान्य सहज सांसारिक कपड़ों में रहने के बजाय विशेष कपड़े पहन कर, विशेष वेषभूषा, पहन कर अपने आप को समाज और सामान्य मानव से अलग दर्शाता है तो समझ लेना कि वह मानसिक दासता का शिकार है। अध्यात्म परमजागरण का नाम है ये अंदर की बात है इसका बाहर के कपड़ो के पहनावे से कोई संबंध नहीं हैं। पहनावा तो हर समाज की अपनी अपनी आवश्यकता है। अंदर के जागरण से बाहर के पहनावे से क्या संबंध है? जागने वाला सूट-बूट मे भी जाग सकता है, सलवार, साड़ी में भी जाग सकता है, फिट पेंट में भी। जागृत गुरू अपना पहनावा बदलकर 'सामान्य से मैं विशेष हूँ' ऐसा अहंकार का प्रदर्शन नही करता। जो भीतर सें नहीं बदल पाते है वह अपने आपको बाहर से ही बदल लेते है, आसान सौदा है। अच्छे-अच्छे महात्मा गुरू कपड़ों की मानसिक दासता से मुक्त नहीं हो पाते हैं। आज भी इस आधुनिक युग में संत-महात्मा कहे जाने वाले लोग एक बगैर सिला हुआ कपड़ा नीचे लपेटते हैं, एक कपड़ा ऊपर डाल लेते हैं। जंगल में जीने वाले आदिवासियों की तरह जहाँ कोई दर्जी की सुविधा नही थी, नाई की सुविधा न होने के कारण दाढ़ी और बाल भी बढ़ाने पड़ते थे, परन्तु आज भी महात्माओं को दाढ़ी बढ़ाए बिना मानसिक शांति नही मिलती क्योंकि क्लीनशेव होते ही उनकी अध्यात्मिकता खतरें में पड़ जाएगी, कपड़े अच्छे ढंग से फिट सिला लिए जाएँगे तो उनकी अध्यात्मिकता गायब हो जाएगी, ये सारी मानसिक कमजोरियां भारत के महात्माओं में ज्यादा है, अन्य देशों के महात्माओं में नहीं। बाजार के बीच सहज-सरल स्वभाव में, सामान्य संसारिक कपड़ों में, निर्लिप्त, काम-धंधा करता हुआ अगर आपको जागृत आनंदित पुरूष मिल जाए तो समझ लेना आपको सच्चा गुरू मिल गया। संन्यास भीतरी अवस्था है, बाहरी नहीं।

11. जो गुरू किसी विशेष संप्रदाय, विशेष दर्शन, विशेष पहनावा, विशेष कर्मकांड, विशेष नियमों के साथ जोड़ता है, वह गुरू सबसे ज्यादा खतरनाक है, इन्होंने अपने विशेष धारणाओं, मान्यताओं के चश्में पहन लिए हैं, अंडे की तरह संप्रदायिक दीवारों के पिंजरे में खुद को कैद कर लिया है, जो खुद बंधे हुए हैं वह आपको क्या मुक्त करेंगे बल्कि अपने पिंजरे में बुलाकर जिंदगी भर विशेष संप्रदाय, पहनावे एवं नियमों की बेड़ियों में जकड़कर गुलाम और अंधा बना देते हैं। ऐसे व्यक्तियों कें जीवन में आत्मज्ञान या आत्म-साक्षात्कार जैसे शब्द हमेशा के लिये समाप्त हो जाते हैं। अध्यात्मिक सत्य के मार्ग पर किसी को भी जब तक वह हिंदू, मुसलमान, ईसाई, या सिक्ख है तब तक उसे बुद्धत्व या आत्मज्ञान की एक प्रतिशत भी संभावना नहीं है। ऐसे गुरू ऊँची-ऊँची आदर्शवादी, नैतिकतावादी, अध्यात्मिक बातें जरूर करते हैं, जो कि स्वयं की न होकर उधार की होती हैं। पीछे से अपने आपकों सांप्रदायिकता, पहनावें में बांधकर आध्यात्मिक मुक्ति की झूठी दिलासा दिलाते है और जीवन भर अपने को बाड़े की भेड़ बना देते है। भोले-भाले लोगों को ये भी नही मालूम कि किसको गुरू बनाया जाए, किसके पीछे लगा जाए, कौन जागा हुआ है, कौन ढोंगी है, कौन बंधा है और कौन मुक्त है।

जागृत व्यक्ति का कोई संप्रदाय, कोई दर्शन, कोई नियम या कोई पहनावा नहीं होता। वह तो परम मुक्ति में जीता है वह स्वयं ही अपना नियम होता है। जागरण ही उसका अनुशासन है। जागरण ही उसका असली धर्म या संप्रदाय है। वह किसी से भी बंध ा हुआ नही होता। बंधा हुआ गुरू खुद संप्रदाय की बैलगाड़ी को खींच रहा होता है और तुम्हे भी उसमें जोत देता है। और हम भी जीवन भर बडे मजे से जुते रहते हैं।

12. जो गुरू विशेष शक्तियों का जागरण या कुंडलिनी जागरण की बात करें तो इनसे आप अगर जुड़ना चाहें ऐसी शक्तियों के जागरण का आपको शौक है तो जरूर जुड़े परन्तु ध्यान रहें इन शक्तियों का अध्यात्मिक जागरण या सत्य सें कोई संबंध नहीं है। कोई भी शक्तियाँ व्यक्तिगत क्षमताओं का विकास है, इन शक्तियों को प्राप्त करके भी आप अंधा जीवन जी सकते है, आप बेहोश रह सकते है, आप अहंकारी, लालची, क्रुर हो सकते है, मूलत: कोई भी शक्तिप्राप्ति शुद्धतम अहंकार का पोषणमात्र है। इसके उल्टें कोई भी शक्ति का जागरण आत्मसाक्षात्कार, आत्मज्ञान से दूर कर देता हैं क्योंकि दोनों विपरीत मार्ग हैं। कुंडलिनी जागरण स्वयं के जागने से बचने का उपाय हैं। जो भी गुरू कुंडलिनी जागरण की बात करता है समझ लेना वह आपको सत्य और अध्यात्मिक जागरण सें दूर लेकर जा रहा हैं। जबर्दस्ती कुंडलिनी जागरण अप्राकृतिक क्रिया है इसके चक्कर में लाखों लोग सत्यमार्ग से भटककर इससे उलझकर रह गये हैं। भारत में लाखों लोग कुंडलिनी जागरण का दावा करते है परंतु दूर-दूर तक कहीं कोई सकारात्मक परिणाम नजर नही आ रहा है यहाँ तक आपके परिवार में पत्नी तक को फर्क नही पड़ा। कुंडलीनी जागरण प्राकृतिक प्रक्रिया है। निम्न जीवन एवं विचारों से मुक्त होते ही उच्च जगत में प्रवेश करते ही कुंडलिनी स्वत: ऊपर की ओर उठ जाती है या यूं कहे उठना ही पड़ता हैं। आप विचार, भाव, अहंकार, आसक्ति, वासनाओं से ऊपर उठते जाइए कुंडलिनी को मजबूरन ऊपर उठना ही पड़ेगा। आप निम्न जगत से बंधे रहकर ऊपर कैसे उठ सकते

है? कुडंलिनी जागरण के नाम पर सदियों सें भटके हुए गुरू लोगों को भटकाए जा रहे है इनसे बचें। राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर, नानक, ईसामसीह, ओशो जैसे बुद्ध पुरूषों ने कभी कुंडलिनी जागरण की तरफ ध्यान नही दिया, कुंडलिनी जागरण उनके जागृति का परिणाम है इसलिए इस संसार में एक भी कुंडलिनी जागरण वाला या विशेष शक्तियों के जागरण वाला व्यक्ति महात्मा नही बन पाया। आत्मजागरण, सत्य के साथ जुडना है तो इस खेल से बचें।

13. जो गुरू ईश्वर को व्यक्ति के रूप में मानता है, उसकी दिन रात पूजा करता है जैसे दुर्गा, शिव, हनुमान, राम, कृष्ण, काली इत्यादि उसके खूब गुणगान करता है उनकी कहानियाँ सुनाता है, तो समझ लेना वह एक भावुक भक्त है, आध्यात्मिकता के प्राथमिक स्तर पर है, उच्च स्तर पर नहीं, जाग्रत पुरूष आकार सें शुरूआत अवश्य करता हैं परन्तु धीरे-धीरे निराकार में विलीन हो जाता है जो आकार के साथ जुड़े रह जाते हैं। वह मानसिक रूप से मूर्तिपूजा के आसक्त हो जाते है, वह आकार के साथ बंध जाते हैं, ऐसे भक्तों का ध्यान भीतर की तरफ न जाकर बाहर की तरफ वह रहा होता है। इसमें आनंद तो अवश्य आता है परंतु बुद्धत्व या पूर्ण जागरण नहीं।

जो गुरू या संत हिंदू के भगवान शिव, दुर्गा, राम, कृष्ण, हनुमान जैसे भगवान की आराधना करते है, उन्ही का नाम जपते है, उन्ही का प्रचार करते हैं तो यह निश्चित है कि उस गुरू की मानसिकता हिंदू संप्रदाय के दायरे में बंधी हुई है, वह ऊपर-ऊपर से भले ही इस्लाम, क्रिश्चियन, पारसी धर्म का आदर करें, प्रशंसा करें परंतु वह अंदर की अंदर हिंदूत्व की खूंटी से बंधा हुआ है, किसी भी संप्रदाय, धारणाओं या दर्शन से बंधा हुआ गुरू तुम्हें भी सत्य या आत्म-जागरण की ओर ले जाने के बजाए एक नए अपने ही दर्शन से बांधकर जीवन भर तुम्हें अंधा बनाकर रख देगा।

जागृत गुरू किसी भी बाहर की मूर्तियाँ, आकार या आवलंबन के साथ नही जुड़ता, वह मानसिक दासता या सीमाएँ पैदा नहीं करता, वह असीमित हो जाता है, वह संपूर्णता में ईश्वर को अनुभव करता है वह स्वयं ईश्वर हो जाता है। उसके लिये मिटटी, कीचड़, कंकड़, पत्थर, कांटा, फूल भी उतने ही महत्वपूर्ण है जितनी ईश्वर की मूर्ति, उसके लिए सिर्फ मूर्ति में ही ईश्वर सीमित नही रहता, कण-कण में उसके दर्शन करता है। इसलिए मूर्तिपूजक गुरू आपको ईश्वर की मूर्ति के साथ बांध देता है मुक्त नही करता इसलिए आप जीवन भर अंतर्मुखी बनने के बजाय बाह्यमुखी बने रह जाते हैं और आत्मज्ञान से वंचित रह जाते हैं। ऐसे भक्त आदर योग्य हैं, पूजनीय हैं, लेकिन बुद्धत्व एवं संपूर्ण सत्य के बहुत बड़े बाधक हैं। शिखर पर पहुँचने नहीं देंगे, आधे रास्ते में ही उलझा देंगे। सामान्य लोगों को ऐसे गुरू बहुत भाएँगे, क्योंकि वह आपको लटकने के लिये खूंटियाँ पकड़ाता है। परंतु सच्चा गुरू आपकी सारी बाहरी खूंटियाँ छिन लेता है।

जागृत बुद्ध पुरूष ब्रह्माण्ड़ (प्रकृति) के नियमों की बात करता है। संपूर्ण ईश्वरत्व या भगवत्ता की बात करता हैं, किसी विशेष अवतार, गुरू या किसी धर्म के विशेष भगवान की बात नही करता, उन्हें बीच में नहीं लाता। राम, कृष्ण, शिव, हनुमान के भक्त अभी हिंदूत्व से बंधे हुए हैं। दायरा सीमित कर दिया, ऐसे गुरूओं से पूर्णता की कभी आशा न करें, जागृत पुरूष न हिंदू होता है न मुसलमान, न क्रिश्चियन उस पर किसी भी सुप्रदाय का लेप या बंधन नही होता। उसका कोई विशेष भगवान नही होता, उसके लिये हर स्वरूप ईश्वर होता है। गुरू और उनके अनुयायी विशेष संप्रदाय, विशेष भगवान, विशेष मंत्र, विशेष पहनावे की बेड़ियों से जकड़े हुए होते हैं, फिर भी अपने आप को मुक्त होने की उद्घोषणा करते है। ऐसे जकड़े हुए गुरूओं से कभी मुक्ति या आत्मज्ञान की कामना न करे, क्योंकि ये विशेष खुंटियों से बंधे हुए घोड़े हैं, ये बंधन ही उन्हें पूर्ण मुक्त नहीं होने देते।

14. जो गुरू सारे शास्त्रों का ज्ञाता हैं, विद्वान हैं, धुरंधर प्रवक्ता हैं, नेताओं की तरह भाषण देने में सक्षम हैं, भाषा और शब्दों का जाल बुनने में माहिर हैं, अपने भावुक प्रवचनों से आपको भावनाओं में बहाने के विशेषज्ञ हैं, भाषा और व्याकरण पर गहरी पकड़ है ऐसे गुरूओं के ज्ञान की अद्भुत दक्षता के लिए सम्मान करना, प्रशंसा करना - आध्यात्मिक मार्ग में इनको भूलकर भी गुरू मत बनाना क्योंकि इनके पास भीतर से उत्पन्न स्वभाविक ज्ञान नहीं है, बाहर से लिया हुआ उधार का (पुराना बीत चुका) सालों से इकट्ठा किया गया थियोरिटिकल ज्ञान (अनुभवहीन ज्ञान) है, सामान्य व्यक्ति के शीघ्र जागने की ज्यादा अधिक संभावना है क्योंकि बाहर का कूडा कर्कट, बोझ कम लदा हुआ है जल्दी उतारा जा सकता है। परंतु ऐसे धुरंधर विद्वानों का आत्मज्ञान या आत्म साक्षात्कार की तरफ जाना प्राय: नामुमकिन है, बल्कि सबसे बड़ी बाधा, दीवार भी यही एकत्रित ज्ञान है। विरले ही कुछ विद्वानों को यह एहसास होता है कि सारा ज्ञान थोथा है, अब तक कुछ नहीं जान पाया और यह एहसास ही उन्हें आंतरिक ज्ञान की ओर ले जाता है इसलिए ऐसे गुरूओं से आपको कभी कुछ नहीं प्राप्त होने वाला बल्कि ऐसे गुरूओं

की विद्वता के प्रभाव में आकर आप जीवन भर इनके गुलाम बनकर रह जाते हैं और अपने स्वयं के जागरण को कभी नही जान पाते है। सदियों से ऐसे विद्वानों ने अध्यात्म जगत पर शासन कर लोगों को सही आध्यात्मिक ज्ञान एवं जागरण सें वंचित कर रखा है। क्योंकि जागा हुआ व्यक्ति मौन द्वारा बोलता हैं। वह लंबे चौड़े प्रवचन नही देता, अपनी विद्वता नही दर्शाता, अपने जीवन एवं व्यवहार से ही सब कुछ कह जाता है। ऐसा गुरू मिले तो फौरन पकड़ लेना, विद्वान गुरू को कभी मत पकडना बहुत बड़ी चूक हो जाएगी।

15. जो गुरू मदारियों की तरह जादूगरी और चमत्कार दिखाता है। ऐसे गुरूओं के पास भी न जाएँ, ऐसा काम तो फुटपाथ, गली-नुक्कड़, स्टेज आदि शो करने वाले जादूगर इनसे बेहतर चमत्कार दिखा सकते हैं। विदेश में एक जादूगर शीशे की दीवार में से बाहर निकल जाता है, पानी पर चलता है, हवा में उड़ जाता है, पूरा का पूरा भीड़ में गायब हो जाता है परंतु वह अपने आपकों गुरू नही कहता, चमत्कारी बाबा नहीं कहता सामान्य चड्डी पहनकर बाजारों में घूमता है, परंतु भारत का कोई बाबा आज तक ऐसा चमत्कार करके दिखा नही पाए, मदारीगिरी करने वाला गुरू एक फुटपाथी अनपढ़ मदारी के मुकाबले ज्यादा अच्छे कपड़े पहन लिए हैं, भाषा अच्छी तरह इस्तेमाल करता है। यही मदारीगिरी इस बात का प्रमाण है कि उसका अपना आंतरिक विकास बिलकुल नहीं है इसलिए बाहर के चुटकलों, खेल, साधन अपनाकर लोगों को आकर्षित कर रहा है, सच्चा जागृत बुद्ध पुरूष ऐसे आडंबर, खेल नहीं खेलता बुद्ध, महावीर, नानक, यीशु अपने आप में स्वयं ही जादू हैं, चमत्कार हैं। इन महात्माओं ने कभी ऐसी चीजों पर कभी ध्यान नहीं दिया। जब भीतर से गुरू शुद्ध हो जाता है प्रेम, आनंद, करूणा से भर जाता है जो उसके एक सरल भाव से कुछ भी चमत्कार घट सकता है वह स्पर्श करे तो रोग ठीक हो सकते हैं, वह जो भाव करें वह आप पर काम कर जाता हैं। क्योंकि वे प्रबल ऊर्जाएँ सकारात्मक ऊर्जाओ में बदल जाती हैं। उसका आंतरिक प्रकाश ही सबसे बड़ा चमत्कार है।

कई बाबा और गुरू अपनी आंतरिक प्राकृतिक परामानसिक शक्तियों को जान लेते हैं और उसका उपयोग करते हैं तो लोग समझते हैं कि वह चमत्कार कर रहा है। सामान्य लोग अपनी स्वयं के भीतर छुपी इस परामानसिक शक्ति कों न जानने के कारण खुद को इन बाबाओं से छोटा समझते है। जैसे हाथों के स्पर्श द्वारा प्राण ऊर्जा प्रवाहित कर किसी को तुरंत आराम दे देना, दूर बैठे विचारों से, टेलीपेथी से स्वस्थ कर देना, मन परिवर्तन कर देना, अंत प्रेरणा के माध्यम से भूत-भविष्य को जान लेना, अंतदृष्टि से कोई घटना देख लेना, अवचेतन मन की शक्तियों से असंभव काम कर लेना।

मानसिक शक्तिओं से चमच्च मोड़ लेना या किसी वस्तु को गति दे देना, लोगो को वश में कर लेना, अपनी चेतना बाहर निकालकर पूर्वजन्म-भविष्य की यात्रा कर लेना, हम समझते हैं कि ये सब सिद्धियाँ हैं, विशेष बाबा ही कर सकते हैं। मैं सालों से यही अंधविश्वास तोड़ता आ रहा हूँ कि ये सभी शक्तियाँ सामान्य, अनपढ़ व्यक्ति में भी होती हैं और मैं इसका प्रशिक्षण भी देता रहा हूँ।

16. जो बाबा विशेष मानवीय शक्तियों का प्रदर्शन करते हैं ऐसे बाबाओं को कभी गुरू न समझे जैसे :-

लंबे लंबे उपवास करना - लंबे उपवास करना मुश्किल नहीं हैं, हम उपवास का विज्ञान बिलकुल नहीं जानते। डॉक्टर भी नहीं जानतें मैने अपनी प्राकृतिक चिकित्सा की प्रेक्टिस में 100-100 दिनों के उपवास सफलतापूर्वक करवाएँ हैं। हमारा शरीर केवल सूर्य की ऊर्जा और प्राणवायु पर भी बगैर आहार के लंबी उम्र जी सकता हैं। हम लोग 2 दिन भी बगैर खाए नहीं रह सकते। हम भोजन के नशे में जकड़ गए हैं इसलिए ऐसी दशा में जीने वाले बाबा हमें चमत्कारिक लगते हैं। उपवास का अध्यात्म से कोई लेना देना नहीं है, यह तो बस एक साधारण मानवीय क्षमता मात्र है जिसे कोई भी अनपढ़ व्यक्ति भी थोड़ी संकल्प शक्ति के माध्यम से कर सकता हैं।

केवल फलाहार पर रहना अन्न नहीं खाना - ये कोई चमत्कारिक आदत नहीं हैं हम स्वयं भी जान चुके कि आग में पका हुआ भोजन निकृष्ट है कमजोर पोषण वाला हैं, उसमें ताजगी या प्राण नही हैं इसलीयें हम लोग भी स्वयं फलाहार पर रहते हैं। विदेशों में सैंकडों लोग फलाहार पर रहते हैं तों क्या वह संत हो गयें, हाँ संतत्वकी पहली सीढ़ी अवश्य हैं।

नंगे बदन हिमालय में रहना - हम अपने शरीर विज्ञान के बारे में यही जानतें हैं कि शरीर बहुत ।करनेज - ।बवउवकंजम का गुण रखता है। हम प्राणऊर्जा का नियंत्रण कर, अवचेतन मन की शक्तियों का विज्ञान जानकर ठंडी, गर्मी को बड़ी आसानी से जीता जा सकता है, अंगारो पर चलना, गर्म- गर्म तेल से पूडियाँ निकालना, सामान्य गाँव के लोग भी कर लेते हैं।

ब्रह्मचर्य का पालन करना - सेक्स का दमन कर लेने से कोई संत नहीं होता। सच्चा संत सेक्स का दुश्मन कभी नहीं होगा,

वह सेक्स को प्रकृति का एक प्राकृतिक वरदान मानकर उसका सम्मानपूर्वक उपयोग करेगा, जैसे कोई संत भोजन उतना ही ग्रहण करता है सम्मानपूर्वक जितना उसके शरीर के स्वस्थ संतुलित रहने के लिये आवश्यक है। ब्रह्मचर्य अति मे जीने का प्रयास है, मध्य में नहीं ऐसे लोगों के जीवन में कभी संगीत पैदा नही होता जो गुरू सेक्स के प्रति नकारात्मक धारणा बनाकर, दुश्मन समझकर इससे दूर रहता है, जबर्दस्ती नियंत्रण करता है, समझ लेना वह गुरू विकृत मानसिकता का शिकार है। उसने सेक्स जैसी पवित्र ईश्वरीय ऊर्जा को सकारात्मक रूप सें समझने के बजाय उसका विरोध कर ब्रह्मचर्य धारण किया है। ऐसे ब्रह्मचारियों के चेहरे पर कोई रौनक नहीं होती, ये सेक्स का दमन करने वाले, अति में जीने वाले, ईश्वर की प्राकृतिक ऊर्जाओं को नहीं समझने वाले आपको कैसे मार्ग दर्शन दे सकते हैं। जो देंगे वह भटकाव ही होगा। सेक्स का सदुपयोग ही ब्रह्मचर्य हैं।

सरल सहज प्राकृतिक प्रगतिशील जीवन के बजाय अति में जीने वाले गुरू, गुरू नहीं होतें, ये संकीर्ण मानसिकता के शिकार लोग हैं ये गुरू जागृत नहीं, बंधे हुए होते हैं अपनी मान्यताओं से जैसे स्नान नहीं करना, दातुन नहीं करना, बाल नोचना, चप्पल-जूते नही पहनना, सिले हुए कपडे नही पहनना, आधुनिक भोजन की थाली न इस्तेमाल कर खप्पर या हाथों में ही खाना, नंगे रहना, दाढ़ी बाल नहीं कटवाना, शरीर पर राख-भभूत मल कर रहना, बेस्वाद फीका कड़वा भोजन करना, शीशा नही देखना, पैसों को नही छूना, स्त्री को नही देखना या हाथ लगाने नही देना, सारे दिन बैठे रहना। ये लोग खतरनाक, पथभ्रष्ट, अप्राकृतिक, अतिवादी, अनुकरण योग्य नही है। ऐसे कृत्य का आत्मज्ञान जागरण या संतत्व से कोई लेना देना नहीं है। ये अध्यात्म मार्ग से भटका कर किसी और अति के मार्ग पर डालने वाले खतरनाक लोग हैं इनसे बचें। जो स्वयं असंतुलित मानसिकता के शिकार हैं वह कैसे तुम्हें सुंदर, संगीतमय, प्रेम युक्त आनंद से भरा संतुलित जीवन दे सकते है। बेहोश आदमी संयम और नियम थोपता है और जागृत व्यक्ति के जागरण के कारण संयम नियम अपने आप घटित हो जाते हैं।

17. वेद, गीता, भागवत, कुरान, बाईबिल, गुरूग्रंथ के धुरंधर विद्वान प्रवचनकर्ता को कभी अध्यात्मिक गुरू, संत महात्मा न समझें इनका बुद्धत्व या आत्मजागरण से दूर तक का संबंध नही हैं। इनके ज्ञान का सम्मान करें, परंतु इनके अनुयायी कभी न बनें; हमेशा के लिए भटक जाएँगें। क्योंकि इन विद्वानों के पास अपना कोई स्वयं का एक प्रतिशत भी ज्ञान नही है सबका सब उधार का ज्ञान है, स्वाद किसी अन्य ने चखा और बखान ये विद्वान कर रहे हैं। इनका अपना कोई स्वाद नही हैं-पराये स्वाद की चर्चा वो ही करते हैं जिनका अपना स्वाद अभी तक प्राप्त नहीं हुआ। ऐसे विद्वान जो भी बोलेंगे रटा-रटाया ज्ञान होगा, जिसका खुद का जागरण नही हुआ वह तुम्हें कैसे जागरण की ओर ले जा सकता है? बुद्ध, महावीर, नानक, कबीर, मोहम्मद, यीशु ने औरो के ग्रंथों की बात नहीं की स्वयं के ज्ञान के बात की - स्वयं का स्वाद बताया। इसकी चर्चा करने वाले अनुयायी इसके अच्छे प्रशंसक है। प्रशंसक और अनुयायी आपके गुरू कैसे बन सकते हैं? वैसे भी आत्मज्ञान के मार्ग में ये सारे ग्रंथों के ज्ञान भयंकर बाधा है, इनके कारण हम पहले से ही धारणाओं से बंधकर, आँखो पर गीता गुरूग्रंथ जैसे ग्रंथों की पटटी बांधकर वास्तविक सत्य को कभी नही खोज पाएँगे, सत्य की खोज के लिए सारा उधार का ज्ञान त्यागना पड़ता हैं जो ये विद्वान कभी नहीं कर पाते हैं। बुद्ध-महावीर ने वास्तविक फूल को देखा और सूंघा है और विद्वान फूल और सुगन्ध की चर्चा मात्र करते है, यही फर्क है जागरूक और विद्वान पुरूष में। सामान्य जनता इनके विद्वता के प्रभाव में आकर इनके अनुयायी बनकर जीवन भर के लिए गलत राह पर भटक जाते हैं। ऐसे ही विद्वानों ने ज्यादा शासन किया है, इसके कारण हम गीता, गुरूग्रंथ पढ़कर अपने आप को बड़ा संत समझने लग जाते हैं और ये गलती सदियों से दोहराई जा रही है इसके कारण ज्ञानी तो हजारों-लाखों पैदा हो गए परंतु बुद्ध, महावीर एवं ओशो जैसे महापुरूष सदियों तक पैदा नही हो पाते हैं। जबकि बुद्धत्व, महावीरत्व हर मानव का जन्मसिद्ध अधिकार है, क्षमता है। सही आत्मज्ञान के लिए हमें इन विद्वानों से मुक्त होना पड़ेगा।

18. जिस संप्रदाय में उत्तराधिकारी होते है या मठों में उत्तराधिकारी के रूप में मठाधीश बनाया जाता है, इनका चुनाव अपने-अपने संप्रदायों के नियम के अनुसार होता है हर संगठन के लिए एक नेता चुनना ही होता है, अधिकतर ये मठाधीश या सांप्रदायिक गुरू अपने अपने संप्रदाय के दर्शन के विद्वान होते है। इनका आत्मज्ञान या जागरण से कोई लेन-देन नहीं है, आप किसी विशेष दर्शन, पहनावा या नियम पसंद करते है तो आप भले ही जुड़ जाएँ परंतु सत्य एवं आत्मज्ञान सें आप बहुत दूर हो जाएँगे क्योंकि सत्य और आत्मज्ञान की यात्रा के पहले ही कदम पर आपने संप्रदायिक धारणाओं का चोला पहन लिया, आँखों पर चश्मा चढ़ा लिया-अब इन सांप्रदायिक दीवारों के पिंजरे में आप कैद हो गये। बाहर का अनंत आकाश, सत्य, ज्ञान अब आपको कभी नही मिल पाएगा। संप्रदाय का अर्थ ही है किसी और के ज्ञान का अनुकरण, स्वयं का ज्ञान नही और अनुयायी के कहीं भी पहुँचने की कोई गुंजाइश नही होती। सत्य की संकरी गली में आपको बिलकुल नग्न प्रवेश करना पड़ता हैं। शरीर

पर मान्यताओं का, धारणाओं का, एक गहना, एक वस्त्र भी चल नही सकता। संप्रदाय भीड़ में सुरक्षा महसूस होती है आत्मज्ञान और सत्य के मार्ग पर आपके साथ कोई भीड़ नही होती। आप अकेले हो जाते है पूर्ण रूप सें असुरक्षित अवस्था में क्योंकि आप शिखर पर है। परंतु असली सुरक्षित जगह भी यही होती है जहाँ आप पर कोई हमला नहीं हो सकता, कोई संप्रदायिक दीवार नही, कोई पिंजरा नहीं, कोई वस्त्र नहीं, गहना नहीं बस केवल परम मुक्त आकाश।

19. जो गुरू बहुत बड़े-बड़े मंदिर, मूर्तियाँ, आश्रम बनाने के शौकीन है, इन गुरूओं से आत्मज्ञान या सत्य की कमी आशा न करें। इनकी अपनी ही भावनाओं, स्वप्नों को कलाओं की अंतिम उँचाइयों को छूकर भले ही विश्व रिकार्ड बनालें, या देखने योग्य एक आश्चर्यजनक अजूबा बनालें, परंतु इनका आत्म-जागरण से एक प्रतिशत भी कोई संबंध नही हैं। इनमें भी सुंदर कृतियाँ तो गैर-अध्यात्मिक लोग भी बना लेते है। आत्मजागरण शुद्ध व्यक्तिगत, वैयक्तिक घटना है। इसका बाहर के मंदिर, मूर्तियाँ, भीड़, सांप्रदायिक चोलों से कोई संबंध नहीं, असली सत्य तो ये है कि भीतर से जितनें खोखले होते हैं उतना ही बाहर की वस्तुओं का विकास करते हैं, आत्मसंतुष्टि के लिए। जब भीतर के मंदिर का विकास रूक जाता है, तब बाहर के मंदिर बनने लग जाते हैं, जब भीतर का परमात्मा अनुभव नही होता या खोज नही पाते हैं तो बाहर की मूर्तियाँ विकसित होने लगती हैं, जितना बड़ा भीतरी अहंकार उतनी ही बड़ी बाहर की मूर्ति बन जाती है। ऐसा नहीं है कि ये मंदिर या मूर्तियाँ आवश्यक नहीं हैं, ये सरल मानसिकता अध्यात्मिक जगत में प्रवेश करने के लिए पहली सीढ़ी हैं। ये प्रवेश द्वार है परंतु पूरी की पूरी मानवता इन प्रथम सीढ़ीयों में ही उलझकर रह गई। बहुत मुश्किल से सदियों में कुछेक लोग इन मंदिर मूर्तियों से मुक्त होकर आत्मजागरण के सर्वोच्च शिखर को छुपाए हैं। बल्कि ये कहना गलत नहीं होगा कि बाहर की मंदिर और मूर्तियाँ ही अंतजर्गत की यात्रा के लियें सबसे बड़ी बाधाएँ बन गई।

सदियों से मानव बड़े-बड़े मंदिर, बड़ी से बड़ी मूर्तियाँ बनाकर विश्व रिकार्ड तोड़ रहा है। क्या मानवता अंतर्मुखी बन पाई अंतर्ज्ञान की तरफ बढ़ पाई या बाहर ही उलझकर रह गई, अब तो हमारी आँख खुलनी चाहिए, हमारे तथाकथित संत, महात्मा, गुरू, लगातार मंदिर के मंदिर निर्माण करवाए जा रहे हैं, पहले तो मूर्तियों की भी एक सीमा थी 4 फीट, 6 फीट, अब 50-100 फीट से नीचे सोचते ही नहीं। भीतर का भगवान जितना छोटा होता चला जाता है बाहर का भगवान उतना ही बड़ा बनता चला जाता है। ये हमारे अंतर्जगत के खोखले होने का सूचक है, दरवाजे बंद हो जाने का सूचक हैं। अब तो भारत, नेपाल के गली-गली में मंदिर हैं और हमारे ये गुरू, महात्मा और बनवाए चले जा रहे हैं। हमारी सारी कमाई, हमारा सारा धन इन मंदिरो में, मूर्तियों को बनवाने में फूँकते चले जा रहे हैं। भारत, नेपाल की गरीबी, गंदगी, अनुशासनहीनता के जिम्मेवार भी यही लोग हैं, जो धन जन कल्याण में, देश-समाज के विकास के लिए लगना चाहिए, वह धन ईश्वर को खुश करने का या अपने आप को धार्मिक कहलवाने का घातक भ्रम को पालने के लिए किया जा रहा है। क्या ऐसे गुरूओं सें आप जीवन के परमसत्य ज्ञान या जागरण की आशा कर सकते हैं?

20. जो गुरू अपने नाम के आगे बड़े-बड़े अलंकार लगाता हैं जैसे 1008, ब्रह्मर्षि, महामंडलेश्वर, परमज्ञानी, ब्रह्मज्ञानी, जगदगुरू, ये प्रत्यक्ष अहंकार के खेल है जो गुरू अभी अनामी आत्मा को बड़े-बड़े नाम और अलंकार देता है वह उसके भीतर के हीनभाव का प्रत्यक्ष प्रमाण है। ऐसे गुरू आत्मज्ञान और सत्य से हजारों कोस दूर हैं, जो गुरू बड़े-बड़े संन्यास के नामों से अपने आपको अलंकृत करते हैं जैसे परमानन्द, ब्रह्मानंद, सच्चिदानंद तो अच्छी तरह समझ लेना कि ऐसे लोगों के भीतरी जागरण एवं ज्ञान के दरवाजे बंद हो चुके हैं इसलिए बाहर से अपने मकान को अलग-अलग रंगो से सजाकर चमकाकर स्वयं को तो धोखा देते ही हैं समाज को भी अपनी बाहरी चमक सें धोखा देते हैं। ऐसे गुरूओं से जुड़कर आप कभी आत्मजागरण या सत्य की आशा न करें। जिस गुरू के भीतर अंधकार होता हैं वह बाहर से अपने आप को सजाकर बनावटी चमक पैदा करता है विविध नाम, अलंकरण, उधार के ग्रंथों का ज्ञान बाहरी विद्वत्ता, विशेष पोशाक, व्यक्तित्व, विज्ञान बड़ी-बड़ी तस्वीरों से अपने आपको सिद्ध करने का प्रयास करता है। जागा हुआ बुद्ध पुरूष इन उपरोक्त सारे बाहरी अलंकरणों से मुक्त हो जाता है। अब आप स्वयं निर्णय करें कि कौन सा गुरू आपको आत्मजागरण की ओर ले जा सकता है।

हम लोग डर के मारे, भारतीय परंपरा के मारे, अपनी स्वयं की हीनता, कमजोरियों एवं आदतो के मारे इनके आगे बिना सोचे समझे झुक जाते हैं और इनके अनुयायी बन जाते हैं। इन्ही के कारण आत्मज्ञान एवं जागरण की सारी संभावनाएँ स्थाई रूप से समाप्त हो जाती हैं।

21. जो गुरू आध्यात्मिक प्रवचनों के साथ मानव समाज एवं विश्व के उत्थान के लिए कई तरह के सामाजिक कार्य करते हैं, जैसे अत्याचारों, अन्यायों का, पुराने घातक रीति- रिवाजों का, प्रथाओं का विरोध करते है, बच्चों के विकास के लिए स्कूल,

कालेज, फीस, भोजन जैसी चीजों की व्यवस्था करते हैं, महिलाओं, विधवाओं, बुजुर्गो के लिए सुविधाएँ पैदा करते हैं, ये अध्यात्मिक प्रवचन करने वाले संत, भागवत, रामायण बाइबल, गुरूग्रंथ का व्याख्यान करने वालें गुरूओं से हजार गुणा ज्यादा अच्छे गुरू हैं परंतु इन गुरूओं से परम बुद्धत्व की हम आशा नही कर सकते क्योंकि इन गुरूओं कों परम बुद्धत्व में रचि नही होती उनकी यह धारणा कि मानव सेवा ही सच्ची ईश्वर सेवा है, ऐसे गुरू इसी मध्य शिखर पर रूक जाते है, इसके उपर के शिखर पर ये जानते हुए कि वह जा सकते हैं, वे जाना पसंद नही करते और अधिकतर ऐसे समाज सेवी स्वाभिमानी, अहंकारी (सत्य, ईमानदारी, अनुशासन कार्य हैं) क्रोधी भी होते हैं। अपने आदर्श और धारणाओं से इनका बहुत गहरा चिपकाव होता है, ये लोग भावुक होते है, अस्त-व्यस्त, परंपरागत खान-पान, रहन-सहन से ये रोगी भी होते हैं, शीघ्र मरते भी है। ये समाज के विकास के लिए अत्यंत उपयोगी होते हुए भी आत्मजागरण के मार्ग में आपके गुरू नही बन सकतें क्योंकि ये सत्कार्य करते हुए भी बंधे हुए लोग है, आदर्श, मान्यताएँ, अनुशासन संयम, आत्मजागरण के काफी करीब होते हैं, सांसारिक जीवन जीते हुए भी इसलिए अन्य गुरूओं के मुकाबले इनसे प्रेरणा लेना ज्यादा बेहतर है।

जो गुरू बाहर की वस्तुओं से अपनी ऊर्जा का विकास करता है या उसके ऊपर निर्भर रहता है, जैसे स्फटिक रूद्राक्ष, नग, रत्न, तुलसी की मालाएँ, चंदन, केसर, भस्म इत्यादि तों स्पष्ट समझ लेना कि अभी तक गुरू को शुद्धता की, असीमित अनंत ऊर्जा के स्त्रोत की जानकारी नही मिली है, इसलिए वह बाहर की उधार की ऊर्जाओं के स्त्रोत का सहारा लेता है। वह उतना ही बाहर की दासताओं या निर्भरताओं पर निर्भर होने लगता है और जो गुरू बाहर की वस्तुओं के ऊपर निर्भर है वह अभी भीतर से अंजान है। ऐसे गुरूओं से आत्म-जागरण की भूलकर भी आशा न करें।

निम्न स्तर के गुरू- कर्मकांड, पूजा-पाठ, हवन, मंत्रजाप, तीर्थयात्रा, दान-दक्षिणा, विशेष पहनावे, विशेष नियम स्वयं की पूजा या आकार रूप में मूर्तिपूजा करवाने वाले शुरूआती नर्सरी क्लास के निम्न स्तरीय गुरू हैं। अगर आप इन गुरूओं से जुड़े हैं तो आत्मज्ञान या मुक्ति असम्भव हैं।

मध्यम स्तर के गुरू- ये वो गुरू हैं जो उपरोक्त बाहर के सभी कर्मकाण्डों के पक्ष में न होकर, गुरूमंत्र या दीक्षा देकर, निराकार, निर्गुण की आराधना करते है। उपवास, ब्रह्मचर्य, विशेष खान-पान, नियम एवं वस्त्रों पर जोर देते हैं, शरीर को सुविधापूर्वक रखने के बजाय, शारीरिक कष्ट को महत्व देते हैं, विशेष ध्यान, विशेष क्रियाओं पर जोर देते हैं, अपने साथ बांधकर रखते हैं। इन गुरूओं सें आप बाहर के कर्मकाण्डों से मुक्त होकर अपने साथ जुड़ने के अध्यात्मिक मार्ग पर तो पहुँच जाते हैं परंतु ऊपर उठने के बजाय कोल्हू के बैल की तरह नियम एवं क्रियाओं में बंधकर गोल-गोल घूमते रह जाते हैं। इस झूठे भ्रम में कि आज नहीं तो कल कहीं न कही पहुँच जाएँगे, ऐसे गुरूओं से भी आप मुक्ति एवं आत्म जागरण की ओर नही जा पाएँगें, परंतु ये निम्न स्तर के गुरूओं से थोड़े बेहतर गुरू हैं क्योंकि शायद कभी न कभी थोड़ी आंतरिक झलक के दर्शन हो जाते हैं।

उच्च स्तरीय गुरू- ये वो गुरू हैं जो आपका संपर्क बाहर के सभी क्रियाकलापों, नियम, वस्त्र तथा कर्ताभाव से ही आपको मुक्त कर देता है, परम शुद्ध चैतन्य को अनुभव करने के लिए, निष्क्रिय अक्रिय अवस्था में रहकर साक्षी भाव (दृष्टाभाव) को विकसित कराता है। सारे लेप, दर्शन, संप्रदायों और विशेष नियमों से मुक्त रखता है, आपको अपने आप से भी मुक्त कर देता है। ऐसे ही उच्च स्तरीय गुरू आपको परम जागरण की ओर ले जा सकते हैं। परंतु दुर्भाग्य से ऐसे गुरू विरले ही मिलते हैं।

सर्वोच्च शिखर वाले गुरू- ये गुरू बुद्ध, महावीर, ओशो, कबीर, कृष्ण, अष्टावक्र, लाओत्से जैसे होते है, जो स्वयं की चेतना से मुक्त होकर परम चेतना के साथ जुड़ जाते हैं, बूंद न रहकर सागर के साथ जुड़कर सागर ही बन जाते हैं। उच्च स्तरीय गुरूओं का फिर से जन्म संभव है परंतु ऐसे सर्वोच्च शिखर पर पहुँचने वाले गुरूओं के जन्म की सारी संभावनाएँ समाप्त हो जाती हैं। ऐसे गुरूओं का अनुकरण नही करना होता बल्कि प्रेरणा लेकर इस शिखर को छूना होता है। ऐसे गुरूओं के जन्मदिन मनाने से, तस्वीरे रखने सें, इनकी नकल करने से, अनुकरण करने सें हम फिर भटक जाते हैं क्योंकि मास्तिष्क में इनकी छाप आपके मुक्ति की सबसे बड़ी बाधा बन जाती है।